RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 40 अंक 47 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 28 अप्रैल 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

नन्धौर : सैलानियों की राह तक रहा है

कार्यालय प्रतिनिधि

हल्द्वानी/टनकपुर। नन्धौर अभयारण्य सैलानियों की राह तक रहा है। नन्धौर के विकास के लिये बराबर बातें हो रही हैं और माना जा रहा था कि इस बार कुछ तो पर्यटक यहाँ भी आएंगे लेकिन बीते 5 माह में केवल आठ सैलानी आ पाए हैं। नन्धौर अभ्यारण्य में जंगल सफारी के लिये वन विभाग द्वारा मात्र दो सौ रुपये प्रति व्यक्ति शुल्क लिया जाता है। जबकि विदेशी पर्यटकों से 500 रुपये शुल्क निर्धारित है। जबकि बच्चों को निःशुल्क जंगल सफारी कराई जाती है। इसके अलावा प्रति व्यक्ति 250 रुपये वाहन के भी लिए जाते हैं।

इस सीजन के 5 माह बीत चुके हैं परन्तु अभी तक मात्र आठ सैलानी ही इस अभ्यारण्य में सफाई के लिये आ सके हैं। पिछले सीज में 122 सैलानी

आए थे। सुविधाओं की कमी के कारण सैलानियों की कमी बताई जा रही है। यहाँ हर साल 15 नवम्बर से 15 जून तक जंगल सफारी की जाती है।

वन विभाग का मानना है कि आगामी 15 जून तक यहाँ पर्यटकों की संख्या में बढ़ोत्तरी होगी। बताते चलें कि नन्धौर अभ्यारण्य में शासन द्वारा सुविधा के लिये दावे किये जा रहे हैं और कुछ कार्य भी दिखाई दे रहे हैं। यदि इसमें तेजी से कार्य हो तो काफी लोगों को रोजगार के अवसर मिलेंगे। चोरगलिया क्षेत्र वासियों को इससे काफी उम्मीदें हैं और कुछ ने रोजगार के लिये शुरूआत भी की है लेकिन उन्हें अभी इन्तजार करना पड़ रहा है। गौलापार से चोरगलिया तक घने जंगल से लगा खूबसूरत क्षेत्र इस दिशा में उम्मीदों भरा है। इसमें जिम कार्बेट पार्क की तरह नई शुरूआत की जा सकती है।

टनकपुर के ककराली गेट से कुछ सालों पहले नन्धौर वन्य जीव अभ्यारण्य में जंगल सफारी की शुरुआत की गई थी। ये अभ्यारण्य 269 वर्ग किमी क्षेत्रफल में फैला है। इसमें बाघ, गुलदार, हाथी, सांभर, हिरन, बारहसिंगा, काकड़, मोर और कई प्रजातियों के पक्षियों को देखने के लिये सैलानी आते हैं। देखते हैं अभी ग्रीष्म सीजन तक क्या कुछ होता है।

नाम बदलना कोई बड़ी उपलब्धि नहीं

कार्यालय प्रतिनिधि

हल्द्वानी। शहर के चौराहों, मार्गों का नाम बदलने को लेकर जिस प्रकार का अभियान चल रहा है वह सिर्फ जुनून है। एक ऐसा जुनून जिसे बड़ी उपलब्धि मान लिया गया है। इस प्रकार के आयोजन में पार्टी शामिल है या प्रशासन? इस प्रकार के सवाल को लेकर चर्चा चल रही है। विगत दिवस कठघरिया चौराहे का नाम बदल कर हैड़ाखान और चौराहे का नाम हैड़ाखान चौक कर दिया गया। मेयर गजराज ने पूजा-अर्चना कर मिष्ठान वितरण भी किया। इस आयोजन में कोई भी अधिकारी-कर्मचारी शामिल नहीं थे। मेयर का कहना है जनता वर्षों से कठघरिया चौराहे के नाम परिवर्तन की मांग कर रह थी, जन भावनाओं को देखते यह किया है। दूसरी ओर नगर आयुक्त ने स्पष्ट किया है कि कठघरिया चौराहे का नाम परिवर्तन कार्यक्रम नगर निगम की ओर से नहीं किया गया है। शासनादेश है कि शासन के अनुमोदन के बाद ही किसी स्थान का नाम परिवर्तन किया जायेगा लेकिन इसका अनुमोदन नहीं किया गया है।

शहर में इस प्रकार के आयोजनों व मनमर्जी बदलावों पर सवाल ही सवाल है। इन्हें उपलब्धि नहीं कहा जा सकता।

भारत के मीलपत्थर

सभ्यता के प्रसार का अर्थ

सूर्यकान्त बाली

विगत दिवस भारत के उद्भट्ट विद्वान सूर्यकान्त बाली का निधन हो गया। वरिष्ठ पत्रकार बाली दिल्ली विश्वविद्यालय में संस्कृत के प्राध्यापक थे, नौकरी छोड़ वह नवभारत टाइम्स में राष्ट्रीय विषयों पर कलम चलाने लगे। बाद में स्वतंत्र रूप से लिखते रहे। पौराणिक आख्यानों पर उनके लेख स्मरणीय हैं पिघलता हिमालय स्व. बाली के शोधपूर्ण लेखों की श्रृंखला में से ही उनके लेख को प्रस्तुत कर रहा है।

जब पक्षी आकाश पर उड़ता है तो वह नीचे जमीन की चीजों पर अपनी एक खास ऊँचाई से निगाह डालता है। ऐसा नहीं कि वह नीचे की हर चीज को देख लेता है। ऐसा भी नहीं कि वह जिस चीज को देखता है उसको काफी गहराई तक देख लेता है। पर वह कुछ खास चीजों को, जो निगाह में आए बिना रह नहीं सकती है और वह भी सरसरी निगाह से। उड़ते हुए पक्षी द्वारा चीजों को देखे की इस शैली को कहत हैं विहंगावलोकन, यानी विहंग (पक्षी) द्वारा अवलोकन (देखा जाना)। हमने भी अपने पिछले तमाम आलेखों में अपने देश के इतिहास का विहंगावलोकन ही किया है। आठ हजार साल पुराने इतिहास का, इतनी पुरानी सभ्यता के विकास का अध्ययन अगर करने बैठेंगे तो अखबार के एक छोटे से कालम में वह काम आप नहीं कर सकते। आप उसके विशिष्ट पड़ावों पर ही निगाह डाल सकते हैं, उसके मीलपत्थरों पर ही अपनी दृष्टि टिका सकते हैं। वह भी चूँकि साप्ताहिक कॉलम के जरिए, यानी आकाश में उड़ते पक्षी की न्याईं कर रहे हैं तो हर खास पड़ाव का भी सांगोपांग अध्ययन करना सम्भव नहीं होता। आप उसका एक लघु परिचय मात्र ही दे सकते हैं। मसलन यक्ष संस्था एक बहुखण्डीय ग्रन्थ विषय है। मनु, पृशु, विश्वामित्र या परशुराम बड़ी किताबों के विषय हैं। दीर्घतम एक सम्पूर्ण उपन्यास का विषय है। सरस्वती नदी एक पूरे शोध का विषय है। हमने सबका विहंगावलोकन किया है और इसमें कोई हर्ज नहीं बल्कि ठीक ही किया है।

चूँकि हमने आठ हजार वर्षों में से अभी शुरू के सिर्फ तेरह सौ वर्षों का ही विहंगावलोकन किया है और यह काम अभी आगे चलने वाल है, इसलिए क्यों न इस बिन्दु पर आकर एक बार रुक जाएं और जैसे शेर चलते-चलते रुक कर, पीछे मुझकर देखता है और फिर आगे बढ़ जाता है, ऐसा सिंहावलोकन एक बार इस तेरह सदियों के इतिहास का कर लिया जए और फिर आगे बढ़ा जाए?

शेष पृष्ठ 5 पर

ओ प्यारे बुरांश....!

नारायण सिंह धर्मशक्तू

''खून पसीना..
और मेहनत की लालिमा को
तब विस्तार मिलता है
जब बुरांश खिलता है।
बुरांश प्रतीक है प्रसन्नता का,
निशानी है सम्भावनाओं का।
सुनो.....इस पहाड़ सी जिन्दगी में
तुम बुरांश की तरह आना।''

शिशिर ऋतु का अवसान, वसन्त का आगमन। सारी वनस्थली पुष्प पत्रों से मर्मरित होती रहती है। सम्पूर्ण उत्तराखण्ड रंग बिरंगी फूलों के नयाब गहनों से सज संवर जाती है। जहाँ उच्च शिखरों में श्वेत धवल राशि बिखरी रहती है वहीं गहरी घाटियों में लाल सुर्ख बुरांश के वृक्ष मनोहारी छटा से हर किसी का मन मोह लेता है।

बुरांश का खिलना प्रसन्नता की निशानी है, बुरांश का खिलना यौवन व आशावादिता का सूचक है। खिलना मादकता जगाती है और गिरना विरह व नश्वरता का प्रतीक है।

जब भी जिन्दगी काम के बोझ से दबी हो मन अकुलाया व खिसियाई हो तो चले आओ पहाड़ की ओर। सबसे अच्छा समय है मार्च-अप्रैल का जब सम्पूर्ण वन प्रदेश में लाल लाल बुरांश खिले होते हैं। उन वनों के बीच बने सड़कों के किनारे किनारों में लाल लाल बुरांश के फूल खिले बिखरे होते हैं लगता है इस अजनबी शहर में कोई तो है जो हमारी राह में फूल बिछाए खड़ा है। कि आओ प्यारे.....इस जगह में तुम्हारा स्वागत है, इसे मैंने बड़े नाजों से पाला है यह तुम्हारे लिए बिछाए हैं.....

मैं उनके सौंदर्य से अभिभूत हो जाता हूँ इस विजन में कितना कुछ अनकहे ही कह जाते हो.....बुरांश। किसने रोपण किया होगा! कौन वह मेहनती माली होगा! किसने अपनी कूंची से सजाया होगा! वह कौन चित्रकार होगा। सब अचरज.....!!!

'जिस ऊँचाई पर सांस लेना भी हो मुश्किल
वहाँ खिलता है बुरांश
लहकते सुर्ख लाल
बुरांश की लालिमा के साथ खिल उठता पहाड़
सुनो जी अगली बार जब भी जाओगे पहाड़
बुरांश की कुछ मीठी यादें ले आना,
वे यादें.....
जिजीविषा, मुस्कुराहट की, जिन्दगी जीने की।'

चलो.....थोड़ा तुम्हें समझने की मेहनत कर ली जाए। पहाड़ों में बर्फ पिघलते ही ऊँची नीची ढलान में सुन्दर लाल रंग के फूलों से पट जाती हैं 1500 से 4000 मीटर की ऊँचाई में खिलते हैं बुरांश। जब खिलता है तो वनों में बहार आ जाती है। बुरांश का वैज्ञानिक नाम है रोडोड्रेडॉन अर्बोरियम। जो ग्रीक भाषा का शब्द है जिसमें दो शब्दों का युग्म है रोडो का अर्थ गुलाब (Rose) डैंड्रान का अर्थ है वृक्ष (Tree)।

बुरांश जब खिलता है तो उसकी चटक लालिमा से जंगल के दहकने का भ्रम होता है। ऐसा प्रतीत होता है मानों प्रकृति ने लाल चादर ओढ़ ली हो। बुरांश को जंगल की लालिमा भी कहा जाता है। उत्तराखण्ड के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में बुरांश का विशेष स्थान है यह केवल एक वृक्ष, फूल न होकर उससे कहीं बढ़कर है। यह लोक जीवन में रचा बसा है। यह केवल वसन्त का सूचक ही नहीं है बल्कि कई लेखकों, रचनाकारों, लोक गायक, कवियों, घुमक्कड़ों व प्रकृति प्रेमियों की प्रेरणा स्रोत रहा है। सभी ने बुरांश को अपने-अपने नजरिए व रंगों से समेटे है।

मार्च-अप्रैल में सम्पूर्ण वन स्थली में बुरांश अपना अप्रतिम सौन्दर्य बिखेरती है। बुरांश के वृक्षों में जब लोहित लगी होती है उससे छन छन कर आती सूर्य की रश्मियां एक अजीब सम्मोहन जगाती हैं। रिमझिम बारिश की बूंदे और उनसे स्पर्श करती मलय समीर मन प्रफुल्लित कर देती है। रात्रि के पहर आकाश में लुकता छिपता चाँद बुरांश के सानिध्य में मन को एक अलौकिक व दिव्य रूप प्रदान करती है।

प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रनंदन पंत जी बुरांश की सौन्दर्य से सम्मोहित हुए बिना नहीं रह सके।
वह कुमाउंनी में लिखते हैं.....

'सार जंगल में त्वि ज क्वे न्हां रे क्वे नहां,
फूलन है गै बुरुंश जंगल जसि जलि जो
सल्ल छ दयार छ पईं अयांर छ
सबनक फड़ान में पुडनक भार छ

शेष पृष्ठ 2 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

उर्वशी का मन्दिर पर दावा

बदरीनाथ धाम के निकट उर्वशी मन्दिर को अपने नाम पर बताए जाने के कारण अभिनेत्री उर्वशी इन दिनों बेहद चर्चा में है। उत्तराखण्ड की इस अभिनेत्री को पता नहीं क्या सूझा है कि वह इंटरनेट मीडिया पर बेवाक कह रही है कि उनकी इच्छा है दक्षिण भारत में भी उनका मन्दिर बने। उर्वशी के बयान पर चारधाम तीर्थ पुरोहितों ने रोष जताते हुए उनसे माफी मांगने को कहा है। ऐसा न करने पर उनके विरुद्ध मामाल दर्ज करने की चेतावनी दी है। मामला बढ़ता देख उर्वशी अब कहने लगी है कि उनकी बात को गलत तरीके से पेश किया गया है। उन्होंने केवल उर्वशी देवी के मन्दिर की बात कही थी न कि उनके नाम पर किसी मन्दिर की।

असल में इंटरनेट पर प्रसारित एक वार्ता में उर्वशी रौतेला ने कहा कि उत्तराखण्ड में उनके नाम का मन्दिर है, जिसका नाम उर्वशी मन्दिर। बदरीनाथ मन्दिर के दर्शन करने जाएंगे तो यह मन्दिर उसके पास ही स्थित है। उनका यह वीडियो खूब देखा गया। इसके बाद तीर्थ महापंचायत ने बयान जारी करते हुए चेताया कि यह खेदजनक है कि कुछ लोग सस्ती लोकप्रियता हासिल करने के लिये इस तरह के बयान देते हैं। उर्वशी मन्दिर बदरीनाथ के निकट स्थित है जो इस क्षेत्र की अधिष्ठात्री देवी है।

उर्वशी रौतेला द्वारा दिये गये बयान से कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिये क्योंकि जिस प्रकार का 'दम ठोकने वाला' समय वर्तमान में चल रहा है वह बहुत ही जिद्दी है। संस्कृति-सभ्यता-संस्कार मानने वाले चुप हैं। वह जानते हैं कि जिस प्रकार का दिखावा और भोंड़ापन, सड़कछाप तमाशा होने लगा है इसमें अपने को सुरक्षित रखना भी चुनौती ही है। न जाने कब कौन बयान जारी कर दे, न जाने कौन कब किस पर बरस पड़े, न जाने कौन किस पर आरोप लगाने लगे, न जाने कौन कम जबर्दस्ती करने लगे। उर्बरी रौतेला ही क्या अन्य नेता अभिनेता भी अपने को भगवान से कम थोड़ा ही मान रहे हैं। वह यह मान बैठे हैं कि हम जितना और जैसा कर रहे हैं वह सब सत्य शिव और सुन्दर है। अपना प्रचार बढ़ाने के लिये ठुमके लगाने से लेकर गैंगबाजी की दहाड़ दिन-रात दिखाई दे रही है, ऊपर से सोशल मीडिया का तड़का भी है। यह भी सत्य है कि कोई धृष्टता एक हद बाद ठण्डी पड़ जाती है, इसलिये संस्कारी, सभ्य, सुशील जनों को धैर्य ही रखना चाहिये।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

शाही विरासत का हीरा अब होगा नीलाम

नई दिल्ली। भारत की शाही विरासत का दुर्लभ 'द गोलकोड ब्लु' हीरा 14 मई को जिनेवा में क्रिस्टः के 'मैग्नीफिसेट ज्वेलर्स' नीलामी में पहली बार नीलाम किया जायेगा। यह किसी जमाने में इन्दौर और बड़ौदा के महाराजाओं के पास हुआ करता था।

सिंगापुर में संसद भंग, 3 मई को चुनाव

सिंगापुर। सिंगापुर की संसद भंग कर दी गई है, जिससे आम चुनाव के लिये मार्ग प्रशस्त हो गया। लम्बे समय से सत्तारूढ़ पीपुल्स एक्शन पार्टी आगामी चुनाव में प्रधानमंत्री लारेंस वोग के नेतृत्व में अपना प्रभुत्व मजबूत करने का प्रयास करेगा। चुनाव तीन मई को होना है।

हसीना और उनके बेटे के खिलाफ नया वारंट

ढाका। बांग्लादेश की एक अदालत ने राजधानी के बाहरी इलाके में आवासीय भूखण्डों के आवंटन में कथित अनियमितताओं से सम्बन्धित दो मामलों में अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना, उनके बेटे सजीब वाजेद और 16 अन्य के खिलाफ नया वारंट जारी किया है।

भारत की वायु गुणवत्ता मानकों से पीछे

नई दिल्ली। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक अधिकारी ने कहा कि भारत की वायु गुणवत्ता संयुक्त राष्ट्र के के इस निकाय के मानकों से काफी कम है और देश की 40 प्रतिशत से अधिक आबादी अब भी कायोमास ईंधन पर निर्भर है। लिहाजा हर साल लोगों की मौत होती है।

भारतीय छात्र और अन्य ने निर्वासन पर केस

न्यूयॉर्क। मिशिगन के सरकारी विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले एक भारतीय समेत चार छात्रों ने अपने छात्र आव्रजन दर्जे को अवैध रूप से समाप्त किये जाने के बाद अमेरिका से सम्भावित निर्वासन के खिलाफ मुकदमा दायर किया है।

जल्द शुरू होगी कैलास मानसरोवर यात्रा

नई दिल्ली। विदेश मंत्रालय ने जानकारी दी है कि वर्ष 2020 से बन्द कैलास मानसरोवर यात्रा जल्द शुरू हो सकती है। मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल के अनुसार जल्द ही जनता के लिये अधिक जानकारी उपलब्ध कराई जाएगी।

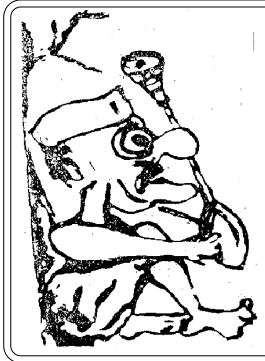

फसक

दाज्यू, फेसबुक पर चैपाचैप में जोर ठैरा

दिखने-दिखाने के लिये फतोड़ाफतोड़ हो रही है बल

दाज्यू, जमाना तरक्की कर चुका है शायद। हमारा घुन्नू और मोहन दिनभर फेसबुक में मौज मना रहे हैं। मदन राम ने तो पास पड़ोसी कोई नहीं छोड़े हैं। कह रहा है- 'जिधर से धुंआ आता दिखता है वहीं खड़े होकर फोटो चेप देता हूँ। नेता हो या साहब, धोबी हो या नाई, नदी हो या पहाड़, जेब में हाथ डालकर झप्प-झप्प फोटू।' दाज्यू, फेसबुक पर चैपाचैप में जोर ठैरा। इससे दुनिया वालों को भ्रम बना रहता है और लगता है भारत-कनाडा-इटली सब एक हो गये हैं और लेखक-कवि-नर्तक-घुमक्कड़-एक्टर सबकुछ का अवतार अपने में हो चुका है। इस चैपाचैप में टायल-ट्यूब वाला बंगला और गाड़ी भी जरूरी हो जाता है। इसके लिये खुड़पैंच करनी पड़ने वाली ठैरी। चाहे चोरी-चकारी हो या लूट, ब्लैकमेलिंग हो या सपने दिखाकर ठगी। इसके लिये दिखने-दिखाने का फैशन भी जरूरी हुआ। तभी तो मुंह में फतोड़ाफतोड़ खूब होने लगी है। दिखने दिखाने के लिये भौं कुतरने से लेकर रिमझिम लगाना भी जोर में है। बारात में मेहन्दी और हल्दी का दिन अलग से जोड़ दिया गया है। शनिवार को काले कपड़े पहन कर ऑफिस जाने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है।

दाज्यू, रुद्रपुर के आशियाना होम्स किच्छा रोड निवासी हेमन्त ने शिकायत की है कि उन्हें नाइजीरिया में नौकरी दिलाने और फिर तीन माह का वेतन हड़प लिया गया। वहाँ पर 12 से 15 घण्टे काम कराया जाता था बल। हल्दी महेन्दी के बढ़ते कारोबार में कुछ भी हो सकता है। विदेश में काम के लिये फड़फड़ाना भी तो स्टाइल ही हुआ। रुद्रपुर में एक युवक को विदेश भेजने के नाम पर 17.65 लाख की ठगी का शिकार होना पड़ा। बालक के परिवार वाले उसे उच्चशिक्षा के लिये विदेश भेजने का सपना देख रहे थे। इंग्लैण्ड या कनाडा में पढ़ाई का सपना धरा रह गया। ठगों की फतोड़ाफतोड़ हाबी हो गई।

दाज्यू, क्या देश क्या विदेश। धर्म-कर्म के साथ शर्म छोड़ चुके लोग भूल चुके हैं कि पायजामे में नाड़ा भी होता है। टनकपुर में शारदा घाट पर मेला ड्यूटी पर तैनात पीएसी जवान के दोस्त ने घाट के पास दुकान में घुसकर दुकानदार की नाबालिग लड़की से छेड़छाड़ कर दी। घाट पर सभी दुकानदारों ने हंगामा किया। बाद में पुलिस के सामने राजीनाम किया गया और भविष्य में ऐसा न करने की माफी मांगी गई। दाज्यू, खटीमा में झील के पास खेल रही बालिका के साथ तीन किशोरों ने सामूहिक दुष्कर्म कर डाला। जौलजीवी के एक सरकारी स्कूल में मास्साब ने कक्षा 9 की छात्रा से छेड़छाड़ कर दी बल। हल्ला मचने के बाद पता चला है कि मास्साब पहले भी दूसरों के साथ छेड़छाड़ कर चुके हैं। शिकायत के बाद पड़ताल हो रही है।

अल्मोड़ा में नैनीताल बैंक की शाखा में पूरा स्टाफ बदल दिया है बल। एक करोड़ से अधिक की अनियमितता उजागर होने पर बैंक प्रबन्धन ने सख्त रूख अपनाया। दाज्यू, बैंक वाले भी क्या करेंगे? चारों ओर नटवर लाल जाली कागज बनाकर घूम रहे हैं और बैंक अधिकारियों को शत प्रतिशत जैसा लक्ष्य पूरा करना होता है। रिटायर्ड बैंक मैनेजर दम सिंह कह रहे थे- 'बैंकिंग के काम में दिमाग का भुर्ता बन जाता है। ग्राहक की सुनो और बड़े साहबों की अलग से। थोड़ा सा चूक हुई नहीं कि सीधे अन्दर।'

दाज्यू, डीडीहाट नगर में स्थापित सार्वजनिक शौचालय में तोड़फोड़ कर दी है। पालिका चैयरमैन ने पुलिस में तहरीर देकर अराजक तत्वों के खिलाफ सख्त कार्रवाई को कहा है। दाज्यू, तभी तो कह रहे हैं कि जिसको जैसा मन हुआ वैसा कर रहा है। दाज्यू, हमारा चैयरमैन शहर में अमन-चैन बात कर रहा है। खनन और जंगल के कारोबारियों ने उनका सम्मान समारोह कर खुशी जताई है। हमें तो गर्मी के मच्छरों का डर हो रहा है। -तुम्हारा भुली झकरुवा

ओ प्यारे बुरांश........

प्रथम पृष्ठ का शेष

पै त्वि में दिलैकी आग, त्वि में छ ज्वानिक फाग
रगन में नईं ल्वे छ प्यारक खुमार छ
सारि दुनि में मेरी सु ज, लै क्वै न्हां....'

भावार्थ- अरे बुरांश सारे जंगल में तेरा जैसा कोई नहीं है। तेरे खिलने से सारा जंगल डाह से जल रहा है। चीड़, देवदार, पद्म व अंयार की शाखाओं की कोपले फूटी है। पर तुझ में जवानी के भाग फूटे हैं रगों में तेरे खून दौड़ रहा है और प्यार की खुमारी छाई है।

गढ़वाली कवि चन्द्रमोहन रतूड़ी ने नायिका की होठों की लालिमा को बुरांश से कुछ इस तरह जोड़ा है.....

'चोरिया कना ए बुरांसन ओठ तेरा नाराण'।।

बुरांश के फूलों ने हाय राम तेरे होठ कैसे चुरा लिए।

कुमाउंनी गीत में बुरांश के फूल बन जाने की आकांक्षा व्यक्त की गयृ है।

हिट रूपा बुरांशी को फूल बनी जौंला
चमचम मीठी डाडियो का पानी पी जौंला
हिलांस की जोड़ी बनी उड़ी-उड़ी जौंला।।

इस लोकगीत में एक प्रेमी अपनी प्रेमिका से बुरांस के फूल बनने की कामना करता है।

पहाड़ के लोकगीतों में सबसे ज्यादा जगह बुरांश को मिली है। बुरांश का गीत व कविताओं में मानवीकरण किया गया है बुरांश को देखकर माँ को ससुराल से अपनी बिटिया के आने का भ्रम होता है।

''पारा भीड़ा बुरांशी फूली छो
मैं ज कुंछू मेरी हीरु अरो छो।।''

वहाँ उधर शिखर पर बुरांश खिल गया है मां समझती है कि उसकी बिटिया हीरू आ रही है। लकदक खिले बुरांश के पेड़ को मां अपनी बेटी हीरू का रंगीन पिछोड़ा समझ बैठती है।

सुप्रसिद्ध कहानीकार श्री मोहनलाल नेगी की कहानी बुरांश की पीड़ में लिखा है नायिका के मुख को अगर किसी परदेसी ने देख लिया तो उसकी मुखड़ी शर्म से लाल हो जाती है जैसे उसका मुख बुरांश का फूल हो गया हो।

वहीं बुरांश रोजमर्रा के जीवन में किसी वरदान से कम नहीं है। खाद्य उपयोग के रूप में देखे तो इसके पुष्प का स्वाद खट्टा मीठा होता है। इसके फूल से शरबत जेली, चटनी बनाई जाती है। दिन में एक बार सेवन करने से भूख पैदा करती है। बुरांश के फूलों में एंटी वायरल खूबियां होती हैं यह कोरोना के वायरस से लड़ने में सक्षम है। इसके अतिरिक्त एनीमिया से बचाव व शारीरिक कमजोरी दूर करने में सक्षम है। इसमें निहित एंटी आक्सीडेंट तत्व हृदय रोगियों के लिए बेहद फायदेमंद है इसके पंखुड़ियों को सूघने से जुकाम, सिर दर्द, बुखार व मांस पेशियों का दर्द दूर होता है। किडनी रक्तचाप मधुमेह श्वेत प्रदर जैसी बीमारियों के लिए भी यह रामबाण है। बुरांश की लकड़ियों से कुछ खास तरह के फर्नीचर , इमारती समान और कृषि यंत्र बनाए जाते हैं जब पेड़ सूख जाता है तो जलावन लकड़ी का काम भी करती है।

परन्तु दुर्भाग्य से पहाड़ में बुरांश के वृक्ष तेजी से घट रहे हैं। अवैध कटान से बुरांश लुप्त होने के कगार पर हैं। जलवायु परिवर्तन के चलते नए पौधे नहीं उग रहे हैं। पर्यावरण की हिफाजत के लिए इसका संरक्षण जरूरी हो गया है। यदि इसी गति से वृक्षों कमी जारी रही तो पहाड़ के जंगलों की रौनक समाप्त हो जाएगी बुरांश सिर्फ लोकगीतों, कहानियों में सिमट कर रह जाएगी।

वसंत फिर आएगा.....पर नीरस फीकी उनींदी वाली वसन्त........।

(जवाहर नवोदय विद्यालय नैनीताल।)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

योजना

पलायन रोकने के लिये मील का पत्थर साबित हो रही होम स्टे योजना

उत्तराखण्ड सरकार की पर्यटन विभाग के माध्यम से संचालित होम स्टे योजना जो राज्य में बेरोजगारों को स्वरोजगार के क्षेत्र में आगे बढ़ाकर राज्य की आर्थिकी व विकास की गति को आगे बढ़ा रही है, साथ ही यह योजना ग्रामीण मुख्य रूप से पहाड़ी क्षेत्रों से हो रहे पलायन को रोकने में कारगार साबित हो रही है। ग्रामीण लाभार्थी इस योजना का लाभ लेकर आत्मनिर्भर होने के साथ अन्य लोगों को भी रोजगार से जोड़ रहे हैं। इन होम स्टे में पहुँच रहे देश विदेश के पर्यटक जहाँ एक ओर पहाड़ी व स्थानीय व्यंजन का स्वाद ले रहे हैं वहीं स्थानीय लोक संस्कृति से रूबरू हो रहे हैं। इस योजना का लाभ देकर सरकार का मुख्य उद्देश्य लोगों को रोजगार से जोड़ना और पलायन कम करना है।

नैनीताल के समीप खुर्पाताल निवासी पंकज कोटल्या पहले खेतीबाड़ी का कार्य करते थे लेकिन सीमित मुनाफा होने के कारण उन्होंने गाँव में रह कर ही कुछ बेहतर करने की सोच को लेकर पर्यटन विभाग के अधिकारियों से होम स्टे की जानकारी प्राप्त की। इसके पश्चात उन्होंने पर्यटन विभाग की पण्डित दीनदयाल

उपाध्याय होम स्टे योजना का लाभ लेकर बैंक से ऋृण लेकर होम स्टे बनाया। उन्होंने बताया कि वर्तमान में उनका होम स्टे बेहतर चल रहा है और अच्छी आमदनी भी हो रही है। कार्य बढ़ने के साथ ही होम स्टे संचालित करने में कर्मचारियों की जरुरत भी बढ़ने लगी। पंकज बताते हैं कि कार्य बढ़ने के कारण उन्होंने गाँव के दो लोगों को होम स्टे में रोजगार दिया। होम स्टे बनाने के लिए सरकार बेहतर सब्सिडी दे रही है। पंकज ने पर्यटन विभाग की इस योजना से 30 लाख रुपये का ऋण लिया जिसमें 50 फीसदी सब्सिडी उन्हें मिली। साथ ही बैंक ब्याज पर 50 प्रतिशत और अधिकतम 1.50 लाख रुपये प्रति वर्ष भी पर्यटन विभाग जमा करेगा। लाभार्थी 5 से 7 वर्ष के बीच में ऋण जमा कर सकता है।

ज्योतिष की बातें- 226

इस सप्ताह चन्द्रमा के अतिरिक्त अन्य कोई भी ग्रह राशि परिवर्तन नहीं कर रहा है। सम्पूर्ण सप्ताह सूर्य व शुक्र उच्चराशि मेष व मीन में, शनि समराशि मीन में, गुरु शत्रुराशि वृषभ में, मंगल व बुध नीचराशि कर्क व मीन में गोचर करेंगे तथा चन्द्रमा इस सप्ताह मेष, वृषभ, मिथुन, व कर्क राशि में क्रमशः गोचर करेंगे।

परशुराम जयन्ती- वैशाख शुक्ल तृतीया प्रदोषव्यापिनी तिथि तदनुसार मंगलवार 29 अप्रैल 2025 को भगवान विष्णु के छठे अवतार भगवान परशुराम की जयन्ती मनाई जाएगी।

अक्षय तृतीया- वैशाख शुक्ल तृतीया पूर्वाह्नव्यापिनी तिथि तदनुसार बुधवार 30 अप्रैल 2025 को अक्षय तृतीया का पर्व मनाया जाएगा। इस दिन किया गया जप, दान, पुण्य आदि अक्षय फल प्रदान करता है।

श्री शंकराचार्य जयन्ती- वैशाख शुक्ल पंचमी उदयव्यापिनी तिथि तदनुसार शुक्रवार 2 मई 2025 को आद्य जगद्गुरु शंकराचार्य भगवान की जयन्ती मनाई जाएगी। इस दिन शंकराचार्य जी के द्वारा रचित किसी ग्रन्थ का पाठ करना चाहिए।

गंगा सप्तमी- वैशाख शुक्ल सप्तमी मध्याह्न व्यापिनी तिथि तदनुसार शनिवार 3 मई 2025 को गंगा जयन्ती का पर्व मनाया जाएगा। इस दिन श्रद्धापूर्वक गंगास्नान एवं गंगापूजन करना चाहिए।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 117

ऊँचा होता विकास

लोगों ने जमीन पर भराव करवाकर काफी ऊँचा मकान बनाया था जिससे कि बरसात का पानी घर के अन्दर न आ सके। लेकिन जब वहाँ सड़क बनी तो मकान सामान्य ऊँचाई पर आ गया। कुछ वर्षों बाद दोबारा सड़क बनी तो घर का कमरा सड़क की ऊँचाई पर आ गया। फिर कुछ समय बाद सड़क बनी तो सड़क ऊँची हो गई मकान नीचे हो गया। अब बरसात में बहने वाला पानी घर के अन्दर आने लगा। पूरे मोहल्ले में बरसात का पानी घर के अन्दर आने लगा। उन सभी मकानों का ग्राउण्ड फ्लोर का कमरा अब तलघर के समान हो गया है। यदि ग्राउण्ड फ्लोर का फर्श ऊँचा किया जाएगा तो उसकी छत नीची हो जाएगी, सिर से टकराएगी। अब यदि कोई अपना मकान बेचना चाहता है तो उचित कीमत भी नही मिलती। ऐसी स्थिति किसी एक मोहल्ले में नहीं बल्कि देश के सभी शहरों में, गाँवों में, सभी जगह हो चुकी है। सड़क की ऊंचाग्र बहुत अधिक हो जाने के कारण लोगों के करोड़ों के मकान बर्बाद हो चुके हैं । कहह्न-कहह्न पूरा का पूरा मार्केट सड़क से नीचे आ गया है बरसात का पानी अन्दर न जाए इसलिए फिर बाउण्ड्री बनानी पड़ती है। लोगों के मकान, दुकान बरबाद किये जा चुके हैं, विकास के नाम पर।

क्या बिना ऊँचाई बढ़ाए सड़क का निर्माण नहीं हो सकता? इस प्रकार लोगों की मेहनत की कमाई के लाखों करोड़ों के दुकान मकान बरबाद करने का अधिकार किसी सरकार को है क्या? इसी को शास्त्रों में पैशाचीराज कहा गया है जिसमें बिना किसी कारण के प्रजा का उत्पीड़न किया जाता है, उस पर क्रूरता की जाती है। विकास के नाम पर जनता पर अत्याचार बन्द होना चाहिए।

-ओंकार नाथ कोष्टा

डिजिटल जीवन प्रमाणपत्र की अनिवार्यता पर पेंशनरों की आपत्ति

पूर्व की वैकल्पिक व्यवस्था को भी जारी रखना जरूरी : पाण्डे

हल्द्वानी। राज्य के पेंशनरों एवं पारिवारिक पेंशनरो को अपना जीवित प्रमाण पत्र अब डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र (डीएलसी) के माध्यम से ही देना होगा।

निदेशक कोषागार दिनेश चन्द्र लोहनी की ओर से सात मार्च को जारी निर्देशों के अन्तर्गत समस्त कोषागारों को इस व्यवस्था को पूरी तरह से लागू करने को कहा गया है। समस्त कोषागारों को सम्बोधित पत्र में कहा गया है कि सरकार द्वारा पेंशनरों एवं पारिवारिक पेशनरों की सुविधा के लिए दिसम्बर 2023 से डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र की व्यवस्था लागू की गई है लेकिन सचिव वित्त द्वारा की गई समीक्षा में पाया गया है कि डिजिटल माध्यम से जीवित प्रमाण पत्र जमा करने वालों की संख्या काफी कम है। इस स्थिति को गम्भीरता से लेते हुए निदेशक द्वारा सभी कोषागारों को सख्त निर्देश देते हुए कहा है कि अब जीवित प्रमाण पत्र डिजिटल माध्यम से ही स्वीकार किये जाएं। पत्र में यह भी कहा गया है कि सचिव वित्त के स्तर से मई 2025 में पुनः इसकी समीक्षा की जानी है और निर्धारित लक्ष्य की पूर्ति नहीं होने की दशा में डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र के अतिरिक्त अन्य विधियों से जीवित प्रमाण पत्र जमा किये जाने की व्यवस्था पर रोक लगाई जा सकती है।

इधर गवर्नमेंट पेंशनर्स वेलफेयर आर्गनाइजेशन की प्रान्तीय कार्यकारिणी के वरिष्ठ सदस्य रिटायर्ड असिस्टेंट आडिट आफिसर रमेश चन्द्र पाण्डे ने इस कार्यवाही को एकतरफा बताते हुए आपत्ति व्यक्त की है। उन्होंने कहा कि डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र की व्यवस्था निःसन्देह पेंशनर की सुविधा के लिए है और इसका आर्गनाइजेशन द्वारा स्वागत भी किया है लेकिन तकनीकी कारणो, नेटवर्क की कमी और अधिक आयु के पेंशनरों की डिजिटल साक्षरता जैसी व्यावहारिक कठिनाइयों को नजरअन्दाज किया जाना उचित नहीं है।

श्री पाण्डे ने कहा कि सरकार को पहले यह जानना चाहिए कि आखिर किन परिस्थितियों के चलते कुछ पेंशनर अब भी पूर्व की भाँति जीवित प्रमाण पत्र दे रहे हैं। उन्होंने दो टूक शब्दों में कहा कि सरकार को सभी विकल्प खुले रखने चाहिए ताकि कोई भी पेंशनर किसी तकनीकी या अन्य कारणवश समय से जीवित प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने से वंचित ना रहे।

आपके पत्र

कैंची धाम में मन्दिर प्रशासन की यातायात अव्यवस्था से यात्री परेशान

सेवा में,
सम्पादक पिघलता हिमालय।

महोदय, नियम है कि यदि कोई संस्था या समिति धार्मिक या सामाजिक कार्यक्रम करती है तो उसे स्थानीय प्रशासन से कार्यक्रम करने की अनुमति लेनी पड़ती है और प्रशासन इस शर्त पर अनुमति देता ह कि जनता के कार्यकलापों इत्यादि पर व्यवधान न होवे, यातायात व्यवस्था बाधित ना होवे आदि आदि।

कैंची धाम मन्दिर की बात करें तो 15 जून को हर वर्ष वहाँ पर एक दिन का आयोजन होता है दूर-दूर से लोग दर्शन के लिये आया करते हैं। पहले भीड़ कम हुआ करती थी गाड़ियां भी कम थी। बाबा जी के समाधिस्थ होने के बाद कुछ समय के लिये ठहराव सा आया था लेकिन बाद में नई व्यवस्था स्थापित होने पर फिर से लोगों का आना शुरू हुआ। विगत कुछ वर्षों से यहाँ पर लोगों का आना बढने लगा और तीन-चार वर्षों से तो ये आलम है कि यहाँ रोज ही 15 जून का जैसा मेला लगने लगा है। मन्दिर प्रशासन ने जैसे-तैसे अन्दर की व्यवस्था तो संभाल ली लेकिन यातायात व्यवस्था चरमरा गई। गाड़ियों का दबाव बेहिसाब बढ़ गया है। मन्दिर प्रशासन द्वारा पार्किंग की उचित व्यवस्था न होने से गाड़ियां सड़क पर दाएं-बाएं खड़ी रहती हैं। भवाली से कैंची धाम पार करने में जहाँ आधा घण्टा लगता था अब हर यात्री को तीन चार घण्टे लगना आम बात हो गई है। यातायात व्यवस्था को संभालने पुलिस प्रशासन आगे तो आया लेकिन मन्दिर आने वाले यात्री अभी भी सड़क पर दाएं बाएं गाड़ियां पार्क कर देते हैं। निगलाट से कैंची उधर रातीघाट से कैंची तक जाम लगना रोज की बात है। जब भीड़ का दबाव बढ़ता है तो पुलिस प्रशासन बौखलाहट में कैंची के अलावा अन्य मार्ग को (रातीघाट, गरमपानी, रानीखेत, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़ आदि) जाने वाली गाड़ियों को भीमताल के पास खुटानी बैंड से डाइवर्ट कर देता है।

समाचार पत्रों में चरमराती यातायात व्यवस्था पर रोज ही टिप्पणियां आती रहती हैं लेकिन शासन प्रशासन को कोई फर्क नहीं पड़ता, किसी की ट्रेन छूट जाये, कोई मरीज एम्बूलेंस में तड़पता रहे या कोई अन्य जरूरी काम हो सरकार की बला से।

बैष्णो देवी मन्दिर में औसतन हजारों यात्री प्रतिदिन दर्शन को जाते हैं लेकिन वहाँ किसी किस्म की अव्यवस्था नहीं होती, तिरुपति बाला जी मन्दिर में रोजाना लाखों यात्री दर्शन करते हैं लेकिन कोई अव्यवस्था नहीं, यात्रियों को समय जरूर लगता है परन्तु दर्शनार्थियों के कारण आम जनता को कोई परेशानी नहीं होती है।

भवाली-अल्मोड़ा मार्ग में कैंची के रोज-रोज के जाम की समस्या से स्थानीय जनता में काफी रोष व्याप्त है। उनको अपने व्यवसाय, नौकरी व अन्य सरकारी कार्यों के लिये रोज ही भवाली-नैनीताल भीमताल, हल्द्वानी आना-जाना पड़ता है। गरमपानी से भवाली सिर्फ आधा घण्टे का सफर है लेकिन उन्हें अब कम से कम डेढ़ घण्टे का जाम तो झेलना ही पड़ रहा है।

शासन को तुरन्त कैंची धाम की यातायात व्यवस्था में सुधार करना होगा जिससे आये दिन जाम को झेल रही आम जनता को निजात मिल सके। इसके लिये ट्रैफिक डाइवर्जन समाधान नहीं है। ध्यान देने की बात है कि भवाली से खैरना के बीच कोई गाड़ी सड़क के किनारे खड़ी नहीं होनी चाहिये इस व्यवस्था को मन्दिर प्रशासन सम्भाले या पुलिस प्रशासन।

-उमेश चन्द्र पाण्डे
जगदम्बा नगर, हल्द्वानी

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

नन्धौर अभ्यारण्य की ऑनलाइन बुकिंग

हल्द्वानी। नन्धौर अभ्यारण्य की वगबसाइट एवं मोबाइल ऐप तैयार है। पर्यटक ऑनलाइन बुकिंग कर सकते हैं। डीएफओ कुन्दन कुमार ने बताया है कि नन्धौर वन्यजीव अभ्यारण्य में ईको-पर्यटन को बढ़ावा देने एवं पर्यटकों की सुविधा के लिये वेबसाइट तथा मोबाइल ऐप शुरू की गई है। इससे पर्यटक अब इकोटूरिज्म जोन में जंगल सफारी, वर्ड वाचिंग ट्रेल के लिए ऑनलाइन बुकिंग कर सकते हैं।

साप्ताहिक बाजार लगाने की मांग

काशीपुर। ग्राम पंचायत बसई में शहीद सरदार भगत सिंह चौहाहे पर पिछले 42 वर्षों से लगातार प्रत्येक रविवार और गुरुवार को साप्ताहिक बाजार लगाया जाता था, जिसे पुलिस प्रशासन द्वारा रोक दिया गया है। इस बाजार को पुन: यथावत लगाये जाने की मांग को लेकर फड़ और सब्जी व्यापारियों ने प्रदर्शन किया।

अस्कोट-कालापानी मार्ग का पुनर्निर्माण

अस्कोट। नारायण नगर मोटर सड़क के चौड़ीकरण कार्य के दौरान कालापानी पैदल मार्ग के क्षतिग्रस्त हो जाने के बाद क्षेत्रवासियों ने रोष जताया। ग्रामीणों के कहने के बाद पीएमजीएसवाई विभाग ने इस पैदल मार्ग का पुनर्निर्माण करने का भरोसा दिलाया है। कहा है कि कि कटिंग कार्य में जो भी नुकसान होगा उसे ठकेदार के द्वारा विभाग ठीक कराएगा।

25 मई को खुलेंगे हेमकुंड साहिब कपाट

देहरादून। हेमकुण्ड साहिब गुरुद्वारा के कपाट आगामी 25 मई को खुलेंगे। इसके मैनेजमेंट ट्रस्ट के अध्यक्ष नरेन्द्रजीत सिंह ने राजभवन जाकर राज्यपाल गुरमीत सिंह से भेंट कर उन्हें 22 मई को पंच प्यारों की अगुवाई में किए जान वाले प्रथम जत्थे की रवानगी हेतु आर्मोत्रित किया जिससे हेमकुण्ड साहिब यात्रा 2025 का शुभारम्भ होगा।

जियारानी के नाम पर हो चौक का नाम

हल्द्वानी। पहाड़ी आर्मी संगठन ने मेयर गजराज बिष्ट को ज्ञापन सौंपते हुए नरीमन चौक का नाम माता जियारानी और कुसुमखेड़ा चौक को श्री गोलज्यू चौक नाम करने की मांग की है। कहा कि इससे हमारी संस्कृति उजागर होती है।

खूंट में समस्याओं को लेकर धरना

अल्मोड़ा। भारत रत्न पं.गोविन्द बल्लभ पन्त की जन्मस्थली खूंट में व्याप्त समस्याओं को लेकर ग्रामीणों ने नगर के गांधी पार्क में धरना दिया। कहा कि ग्राम पंचायत खूंट धामस, सैनार, रौनडाल चाण में कोसी नदी पर पुल बनाने और सड़क पर डामरीकरण के साथ जीआईसी खूंट में पेयजल व्यवस्था सुचारु की जाए।

थल के पौराणिक मेले में थिरके

थल। तीन दिवसीय पौराणिक थल मेले में लोक कलाकार थिरके और भक्तों ने पौराणिक शिव मन्दिर में आशीर्वाद लिया। मेले का शुभारम्भ विधायक विशन सिंह चुफाल ने ने किया। हरिदत्त पन्त इन्टर कालेज के एनसीसी कैडेड्स के मार्च पास्ट, छोलिया दल व महिलाओं और स्कूली छात्राओं की कलाश यात्रा व झांकियों के बीच मुख्य मार्ग पर शोभा यात्रा निकाली गई। मेला समिति द्वारा अतिथियों का स्वागत किया गया। प्रशासक बबीता चुफाल ने मेला हेतु एक लाख रुपयो और सामाजिक कार्यकर्ता भगवान सिंह देऊपा ने 51 हजार रुपये की नकद धनराशि मेला समिति को दी।

बालेश्वर मन्दिर में पुजारी भुवन चन्द्र भट्ट सहित पुजारियों की देखरेख में पूजा अर्चना हुई। मेला समिति की ओर से मन्दिर को छह कुन्टल फूलों से सजाया गया था।

मेले के द्वितीय दिवस के अतिथि भाजपा नेता लक्ष्मण सिंह खाती ने महोत्सव समिति को 51 हजार रुपये की नगद राशि भेंट की। ऊर्जा निगम के मुख्य अभियन्ता नरेन्द्र टोलिया ने 11 हजार रुपये का सहयोग प्रदान किया।

मेले के समापन अवसर पर अतिथि के रूप में पूर्व ब्लाक प्रमुख हरेन्द्र चुफाल थे। इस दिन भी मंचीय प्रदर्शन देखने को मिले। इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष दिनेश चन्द्र पाठक, भूपेन्द्र पांगती, प्रवीण जंगपांगी, नवराज भैसोड़ा, सुनील गोस्वामी, राज जोशी, प्रमोद उपाध्याय आदि थे।

स्याल्दे बिखौती में ओड़ा भेंटने की रस्म

द्वाराहाट। स्याल्दे-बिखौती मेले में ओड़ा भेंटने की सस्म के साथ ही झोड़ा-चांचरी की मदमस्त चाल देखने को मिली। इस पौराणिक मेले का आकर्षण आज भी भरपूर है। कत्यूरी राजाओं ने यहां सुन्दर सरोवन बनाया, जिसके किनारे शीतला देवी और कत्यूरी राजा ब्रह्मदेव और धामदेव की पूजा की जाती थी। यही सरोवर बाद में शीतला देवी के नाम पर स्याल्दे पोखर कहा गया। इसी पोखर के किनारे बैशाखी पर स्याल्दे बिखौती मेला भी लगता था और योद्धा अपने कौशल का परिचय देते थे। पाषाण युद्ध भी होता था जो बाद में ओड़ा भेंटने के रूप में बदल गया। इसमें तीन आल, नज्यूला और खरक खापें जो नगाड़े-निशाणों के साथ इस परम्परा को बनाए हुई हैं। बिखौती का मेला विमाण्डेश्वर में रात को होता है। लोक की इस परम्परा में इस बार भी सैकड़ों लोगों के हुजूम ने बारी-बारी से ओड़ा भेंटा। पहली पारी में गरख धड़े ने ओड़ा भेंटा। वहीं दूसरी बारी में आल धड़े के छह जोड़े नगाड़े निशानों ने प्रतिभाग किया। शीतला पुष्कर मैदान में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ थिरकने के लिये ग्रामीण मौजूद थे। विधायक मदन बिष्ट सहित तमाम गणमान्य भी थे।

खड़िया खानें खोलने को लेकर प्रदर्शन

हल्द्वानी। उत्तराखण्ड देवभूमि ट्रक ऑनर्स महासंघ ने ट्रांसपोर्ट नगर गेट में खड़िया खानों के बन्द होने के विरोध में धरना प्रदर्शन किया। महासंघ के नेता राकेश जोशी के नेतृत्व में सरकार से शीघ्र खड़िया खानें खोलने की अपील की। उन्होंने सरकार से अनुरोध किया कि ट्रान्सपोर्टर्स के हितों की रक्षा करते हुए उच्च न्यायालय से ट्रान्सपोर्टर्स और ट्रक मालिकों की पीड़ा को समझा जाए। उन्होंने हाईकोर्ट को खड़िया खानों को खोलने और उच्च मानकों के तहत सरकार को ठोस और सख्त खनन नीति बनाने के लिये आदेशित करने का आग्रह किया। जिससे खड़िया खानों को सुचारू रूप से खोला जा सकता है। राकेश जोशी ने कहा कि खड़िया खानें बन्द होने से बेरोजगारी बढ़ गई है। गाड़ी मालिकों की किस्तें टूट गई हैं, जिससे बैंकों का कर्ज बढ़ते जा रहा है। इस वजह से गाड़ियां खड़ी करने पर मजबूर हो गए है। एक बड़े वर्ग के रोजगार की चिन्ता में फैसला हो।

ओगला-थल सड़क का चौड़ीकरण होगा

डीडीहाट। ओगला-थल सड़क का चौड़ी करण होगा और दुर्घटनाओं को रोकने के लिये कैश बैरियर लगाये जाएंगे। इसके लिये डीपीआर तैयार होनी है।

लोक निर्माण विभाग को डीपीआर तैयार करने के लिये 17 लाख रुपये की राशि प्राप्त हुई है। सड़क चौड़ीकरण की पहल शुरू होने से लोगों में खुशी है क्योंकि अभी तक सिंगल रोड होने से इसमें वाहनों का दबाव रहता है और खतरा भी बना रहता है। 35 किमी लम्बी ओगला-थल सड़क अस्कोट-कर्णप्रयाग मोटर मार्ग के नाम से जानी जाती है। दो मण्डलों को जोड़ने के कारण अति महत्वपूर्ण इस सड़क को आज तक चौड़ा नहीं किया जा सका था। इस सकरी सड़क पर तीव्र मोड़ हैं और हादसों का भय बना रहता है। काफी समय से माना जा रहा था कि इस सड़क का चौड़ीकरण होगा, जो अब होने की उम्मीद है।

लोनिवि की मानें तो शीघ्र ही डीपीआर तैयार कर इसे स्वीकृति के लिये शासन को भेजा जाएगा। लोनिवि के ईई आशेतोष ने बताया है कि डीपीआर के लिये निविदा आर्मत्रित कर दी गई हैं।

बिन्दुखत्ता राजस्व ग्राम बनाने की मांग

हल्द्वानी। बिन्दुखत्ता के राजस्व गाँव के दावे पर स्वीकृति की मांग को लेकर बिन्दुखत्ता वन अधिकार समिति के सदस्यों ने प्रदेश के नवनियुक्त मुख्य सचिव एवं एफआरए निगरानी समिति के चैयरमैन आनन्द वर्धन से भेंट कर ज्ञापन सौंपा। मुख्य सचिव से आग्रह किया गया है कि बिन्दुखत्ता की ऐतिहासिक बसासत को देखते हुए एफ आरए के तहत दावे को स्वीकृति दी जाए। ज्ञापन में समिति के पदाधिकारियों ने कहा कि बिन्दुखत्ता की बसासत 1982 से पूर्व की है। इसके बावजूद अब तक क्षेत्र को राजस्व गाँव का दर्जा नहीं मिल सका है। स्वतंत्रता के बाद से लेकर अब तक यह मांग बार-बार उठाई जाती रही है और उत्तराखण्ड राज्य गठन के बाद सभी मुख्यमंत्रियों ने इसे राजस्व गाँव बनाने की घोषणा भी की लेकिन परिणाम आज तक नहीं मिला। राजस्व ग्राम होने से क्षेत्र का विकास होगा।

भूजल और जीएसटी विभाग दे रिपोर्ट

नैनीताल। हाईकोर्ट ने बागेश्वर जिले के काण्डा सहित तहसील के अन्य गांवों व पूरे बागेश्वर जिले में हुए अवैध खड़िया खनन से आई दरारों के मामले में स्वत: संज्ञान लेकर पंजीकृत की गई जनहित याचिकाओं व खनन इकाइयों के मामले में एक साथ सुनवाई की।

मुख्य न्यायाधीश जी.नरेन्द्र एवं न्याय मूर्ति आलोक मेहरा की खण्डपीठ ने केन्द्रीय भूजल व जीएसटी विभाग से रिपोर्ट देने को कहा। सुनवाई के दौरान आयकर विभाग ने एक माइनिंग का रिकार्ड सीलबन्द लिफाफे में पेश किया, जिस पर सुनवाई होनी है। कोर्ट ने खनन पर लगी रोक जारी रखी है। आरोप लगाया गया कि खनन वालों ने जीएसटी व अपनी आय को भी छिपाया है। इसकी रिपोर्ट को भी तलब की जा रही है, जबकि खनन करने वालों की ओर से कहा गया कि उनके खनन के पट्टों की लीज समाप्त हो गई है। इस पर लगी रोक को हटाया जाए। जो सॉफ्ट स्टोन सीज किया है उसे भी रिलीज किया जाए। उनके ऊपर बैंकों का लोन है।

समय पर आएगा मानसून

हल्द्वानी। प्रदेश में इस बार समय से मानसून आ आएगा। जून से सितम्बर महीनेमें सामान्य से अच्छी बारिश फसलों के लिहाज से ठीक है। मौसम विज्ञानियों के अनुसार इस बार अभी तक अलमीनो की सम्भावना नहीं बन रही है। पन्तनगर कृषि विवि के के विशेषज्ञ डॉ.आर.के. सिंह के अनुसार सामान्य से ज्यादा करीब 1.10 प्रतिशत बारिश होने की उम्मीद है।

गौला पर एक और पुल के लिए पत्र

हल्द्वानी। सांसद अजय भट्ट ने गौला नदी पर एक और पुल बनाने केलिए एनएचआई के परियोजना निदेशक को पत्र भेजा है। उन्होंने तत्काल इसका प्रस्ताव तैयार कर शासन को भेजने के लिये कहा है। सांसद ने पत्र में कहा है कि लम्बे समय से एक अन्य पुल की मांग क्षेत्रवासी कर रहे हैं। साथ ही वर्तमान पुल को बरसात में अनहोनी की आकांशा के चलते बन्द करना होता है।

परिक्रमा

विस्थापन के लिये धरने पर बैठे ग्रामीण

मुनस्यारी। आपदा प्रभावित गाँवों के विस्थापन और भूगर्भीय जाँच की मांग को लेकर ग्रामीण धरने पर बैठे। युंका जिलाध्यक्ष विक्रम दानू के नेतृत्व में बोना, गोल्फा, तोमिक, आलम, पत्थरकोट भैंसखाली, रतगाड़ी, जोशा, मालुपाती, धापा, टांगा, झापुली आदि गाँवों के ग्रामीण पहले से ही इस मांग को उठा रहे हैं।

सर्वे टीम का विरोध किया

लोहाघाट। बाईपास का सर्वे करने पहुंची टीम का रायकोट के ग्रामीणों ने विरोध किया। उनका कहना है कि बाईपास का निर्माण नाप के बजाए बेनाप भूमि से होना चाहिये। सर्वे टीम ने ग्रामीणों की बात उच्चाधिकारियों तक पहुंचाने की बात कही। बताते चलें कि लोहाघाट-पिथौरागढ़ एनएच में प्रस्तावित देवराड़ी बैंड-राईकोट-मरोड़ खान बाईपास का सर्वे इन दिनों चल रहा है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

सभ्यता के प्रसार.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

तो क्या कहा जाए? कहने को दो बाते हैं। बात का बात का रिश्ता हमारी उस पौराणिक परम्परा से है जिसने भारत के इस कालखण्ड के बारे में दो तरह की धारणाएं समाज में विकसित होने दी हैं। एक पूर्ण विकसित, लगभग दैवी किस्म का भारत था, जहाँ सब तरफ सत्य की प्रतिष्ठा थी, सभी प्रजा जन अपना-अपना काम अपने-अपने धर्म के हिसाब से करते थे, ऐसा तक कुछ भी नहीं था जिसे हम आज की भाषा में पाप कहते हैं और चारों ओर प्रसन्नता और खुशहाली का आलम था। हमारे मन में सम्ययुग (या कृतयुग और आगे से हम कृतयुग ही कहेंगे) की कल्पना यही है। इसी अवधारणा में यह भी यही कहीं जुड़ गया है कि वेद ईश्वर ने रचे, मनुष्य को वो उसी ने प्रदान किए, वेदों में सिर्फ गूढ़ आध्यात्मिक बातें हैं और ऐसे वेद तपोलीन ऋषियों के दिव्यप्रकाश की तरह प्रकट हुए। इसके विपरीत दूसरी अवधारणा, वह भी पौराणिक परम्परा में गरहे उतरने के बाद, यह बनती है कि इस देश का बकायदा उक इतिहास है जो वैसे तो काफी पुराना ह पर मनु के बाद से वह लगभग ज्ञान रूप में हमें उपलब्ध है और उसके आधार पर पिछले आठ हजार साल का एक ताना बाना बुना जा सकता है। ये दोनों अवधारणाएं एक दूसरे से कितना विपरीत हैं, बताने की जरूरत नहीं। यह जरूर दिलचस्प है कि ये दोनों अवधारणाएं पौराणिक परम्पराओं में से ही उपजी है। पर यह देखकर जरूर हैरानी होती है कि हमारे देश ने इतिहास वाली अवधारणा को तो पिछली सीटों पर बिठा दिया और इस अवधारणा की ताजपोशों कर दी कि कृतयुग में सब तरफ पुण्य ही पुण्य था, तप ही तप था, सच्चाई ही सच्चाई थी, उसी माहौल में ऋषियों को ईश्वर ने साक्षात वेद प्रदान किए।

ऐसा क्यों होगा, यह एक लम्बी बहस का मामला है जिसके लिए किसी भी विहंगावलोकन के पास के पास अवकाश नहीं हुआ करता। जाहिर है कि कृतयुग में सब तरफ पुण्य ही पुण्य था, इस अवधारणा का सम्मान करते हुए ही, हमारे पुराणों की दूसरे ग्रन्थों में सुरक्षित इतिहास की परम्परा को तरजीह दी है और पाया है कि भारत एक ऐसी सभ्यता या संस्कृति है (दोनों में फर्क ही क्या है?) जिससे एक लम्बा जीवन जिया है, अपने इस जीवन में इससे अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं और अपने तमाम उतार-चढ़ाव , तनावों, दबावों को झेलते हुए उससे खुद को इस कदर मजबूत बना लिया है कि भविष्य का एक अतिदीर्घ जीवन जीने की चरम आकांक्षा से यह सभ्यता आज परिपूर्ण नजर आती है। जब हम कहते हैं कि मनु से पहले अन्धेरा था या बियाबान था। ऐसा कभी होता है क्या? जिस भी देश या जाति का इतिहास हमें मालूम है, उससे पहले इस देश या जाति में सब तरफ सुनसान था, ऐसा कभी होता है क्या? आज उसे बता पाना कठिन है क्योंकि जितनी मनुपूर्व की घटनाएं हमारी पौराणिक स्मृतियों में दर्ज हैं उनसे हमे उस इतिहास का कमवार बता पाने में मदद नहीं मिलती और जब हम मनु को आज से आठ हजार साल पहले का बताते हैं तो उसका आधार भी कोई कम प्रामाणिक नहीं। महाभारत आज से 5 हजार साल पहले हुआ, यह इतिहास सत्य आज पश्चिमी विद्वानों के हर कूटनीतिक शोध कुप्रचार के बावजूद स्थापित है ओर कुछ अन्धेरे कोनों को छोड़ सभी के द्वारा माना जा चुका है। मनु और महाभारत के बीच 108 या 109 पीढ़ियों का इतिहास दर्ज है। एक पीढ़ी करीब 30 कालखण्ड (इससे ज्यादा नहीं तो) देने की मान्यता को अगर स्वीकार कर लें तो महाभारत से पहले का इतिहास तीन हजार साल से कम नहीं बैठता। इमने ऊपर कहा कि कहने को दो बातें हैं, जिनमें से एक बात पौराणिक परम्परा की है जिसका विवेचन हमने किया। दूसरी बात पश्चिमी विद्वानों द्वारा फैलायी गयी अफवाहों की है जिसे वे हमारा इतिहास कहकर हम पर थोपने की कोशिश करते रहे हैं और जिसको हम अपने प्रथम चार आलेखों में प्रमाण पूर्वक अफवाह सिद्ध कर चुके हैं। इन अफवाहों के मुताबिक हमारे पूर्वज आर्य थे, वे कहीं बाहर से आए थे, कहाँ से आए थे, यह अभी तय होना है, पर वे पश्चिम से भारत की सीमा में घुसे थे, उनके द्वारा लिखे वेद सामान्य गडेरियों के गीत हैं, शुरू में मन्त्र भारत के पश्चिमी-उत्तरी इलाकों में लिखे गए, इसलिए पुराने आर्यों को सिन्धु का पता था पर गंगा-यमुना का पता नहीं था, जैसे-जैसे आर्य पूरब की तरफ बढे वैसे ही उनका परिचय शेष इलाकों और नदियों से होता गया, अपनी सभ्यता को फैलाते हुए वे कई सदियों बाद दक्षिण गए और महाभारत युद्ध तक, जिसे ये अफवाहकारी 400ई.पू. में यानी चन्द्रगुप्त मौर्य से करीब सौ साल पहले का मानते हैं, आर्य सभ्यता सारे भारत में फैल चुकी थी।

हमने अभी तक जितने मानव भारतीयों का, मन्त्र रचना के विकासक्रम का, विचारों के बीजारोपण का जिक्र किया है, उस तमाम के सन्दर्भ में इन अफवाहों को बेबुनियाद साबित करने की कोई जरूरत बची नहीं है। पर तीन-चार घटनाओं को थोड़ा रेखांकित करने से ही अफवाहों की यह बालू की मीनार भरभराती हुई नीचे आ गिरेगी और वैसा करना हर भारतवासी का राष्ट्रीय कर्तव्य होना चाहिए। मसलन हमारे देश के प्रथम ज्ञात राजा मनु अयोध्या में राज करना शुरू हुए थे। जिन ऋषभपुत्र भरत के नाम पर देश का नाम भरत पड़ा, वे भी अयोध्या के थे। उनके भाई भगवान बाहुबलि कर्नाटक में तपोलीन हुए थे। विश्वामित्र नामक प्रथम मन्त्रकार, जिन्होंने गायत्री मन्त्र रचा वे कान्यकुब्ज के राजा थे और उन्होंने गुजरात में जाकर तपस्या की थी। मनु की सन्तानें ही एक-एक कर दक्षिण समेत सारे भारत पर राज करने लगीं जिनके अलग अलग राजवंश चले और जाहिर है कि राज बियाबान में नहीं हुआ करते। हैहय गुजरात के शासक थे और उनके कुलगुरु भार्गव का आश्रम मध्य भारत में नर्मदा के तट पर था। खुद वशिष्ट हिमालय से उतर कर अयोध्या के इक्ष्वाकु राजाओं के कुलगुरु बनकर अयोध्या में रहने लगे थे, जबकि दीर्घतमा के पूर्वज वैशाली राज्य के कुलगुरु थे। उधर, अत्रकुल के लोग यज्ञसंस्था का प्रचार करने पश्चिम की तरफ, शायद आज के ईरान की तरफ निकल गए थे तो दीर्घतमा के सहोदर भाई भारद्वाज के एक वंशज भारद्वाज ने प्रयाग में गंगा-यमुना के संगम के पास अपना आश्रम बना दिया था। दुष्यन्त की राजधानी प्रतिष्ठान थी तो उनके पुत्र भरत ने अपना राज्य फैलाकर राजधानी (बाद में हस्तिनापुर के नाम से प्रसिद्ध हुए) नगर में ले जाकर बसाई। अर्थात् अगर राजवंश सारे भारत में पफैल चुके थे तो ट्टषिकुल भी अनेक नदीतटों पर बस चुके थे और मन्त्रा रचना भारत के पूर्वी हिस्से में ही शुरू होकर उसी इलाके में ज्यादा हुई और बाद में भारत में स्थान-स्थान पर बसे ट्टषि मंत्रा रचना में लग गए। अब बताइए इस पूरी तस्वीर के प्रफेम में यह गप कहाँ पिफट होती है कि कोई आर्य नाम की जाति थी जो भारत से बाहर कहीं से आई थी? यह अपफवाह कहाँ सही साबित होती है कि मन्त्रा पहले सिन्धु नदी के किनारे लिखे गए और बाद में मन्त्रा लिखने ाले पहले पूरब पिफर दक्षिण में पफैलते गए? राज्यों और राजधनियों के इस बड़े सन्दर्भ में भला इस झूठ के पाँव टिकने को कहाँ जगह मिलती है कि कथित आर्य शहरों को नष्ट करने वालों को व गाँवों को पसन्द करने वाले थे? ट्टगवेद की जिस भव्य और श्रेष्ठ कविता से हमने अब तक परिचय पाया ळ, उसके बाद हम प्रचार पर कौन समझदार अपना कान ध्रेगा कि वेद तो बस यूं ही कुछ चरवाहे के लोकगीत हैं? टिप्पणी चरवाहों के लोकगीतों पर नहीं, वे भी जिन्दा समाजों के दिलों की ध्ड़कन होते हैं। पर जिस घटियापन की ओर इस जरिए अंग्रेज बहादुर इशारा कर रहे थे उसमें चरवाहों के गीतों और वेदों दोनों के लिए हिकारत भरी है। दरअसल कृतयुग में सभी पुयण्मय और वेदों को ईश्वरीय रचना मानकर हमारी पौराणिक अवध्ारणा भारत के प्रति प्रेमातिरेक और भावातिरेक से प्रेरित होकर इतिहास को अपने हिसाब से गौरवपूर्ण बना रही थी, वहीं पश्चिमी विद्वानों ने भारत को नीचा दिखाने के घृणातिरेक से प्रेरित होकर हमें हमारी जड़ों से ही काट डालने की कूटनीति की। अगर दोनों अतिरेक हैं तो हमारा प्रणाम उस अतिरेक के प्रति है जिसने भारत को अपने कद से बड़ा दिखाने की कोशिश की। इस कोशिश मं एक रचनात्मकता है और उसके परिणाम कभी न कभी सकारात्मक भी सामने आ सकते हैं। पर हमें ऐसा प्रणाम प्रस्तुत करते हुए भी भूलना चाहिये कि मनुष्य की तरह, मनुष्य के चारों ओर बिछी पड़ी वनस्पति-प्रकृति की तरह सभ्यताओं का भी विकास होता है। वे कोई विकास का गुच्छा बनाकर देवताओं द्वारा आसमान से पृथ्वी पर नहीं गिरायी जाती। इस सन्दर्भ में हमारा निवेदन यह है कि जब मनु आज से आठ हजार साल पहले इस देश के पहले राजा बने तब पूरे भारत में एक विकसित सभ्यता थी जो कमशः और आगे पफल-पफूल रही थी। कुछ पफल-पफूलों को हम पिछले आलेखों में सूंघ आए थे।

Enjoy Beauty of
Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट सम्पर्क
नरेन्द्र सिंह रावत 7351285555

कपूर एण्ड संस
संजय कलोनी, मुखानी हल्द्वानी
कपूर इण्टरप्राईजेज
निकट मंगलम बैंकट हॉल, देवलचौड़
रामपुर रोड, कैंची धाम मार्ग हल्द्वानी
9997712279 9837824462

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड,
दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान)
मो.- 9760342346

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
मो.न. 8958525979, 9411134775
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

स्टेट मैप का तीसरा संस्करण

सर्वे ऑफ इंडिया ने जारी किया उत्तराखण्ड का नया नक्शा

देहरादून। स्टेट मैप के तीसरे संस्करण के तहत सर्वे ऑफ इण्डिया ने उत्तराखण्ड का नक्शा नया नक्शा जारी किया है, जिससे प्रदेश की सटीक जानकारियां प्राप्त हो सकती हैं।

सर्वे ऑफ इण्डिया ने उत्तराखण्ड के स्टेट मैप का पहला संस्करण राज्य गठन के बाद वर्ष 2003 में जोरी किया था। इसके बाद नक्शे का दूसरा संस्करण वर्ष 2008 में तैयार किया गया। अब लम्बे समय बाद यह तीसरा संस्करण तैयार है।

इसमें देश में अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं से लेकर इस अवधि में रोड नेटवर्क के बदलाव दिखते हैं।

उत्तराखण्ड में एसआईटी सक्रिय

टनकपुर में भी जांच के लिये टार्च दिखा दिया है

हल्द्वानी। शिक्षा विभाग में हुई नियुक्तियों में कहीं किसी प्रकार की गड़बड़ी तो नहीं है यह जाँचने के लिये एसआईटी बेहद सक्रिय है। इसी सिललिसे में अब टनकपुर में भी जाँच के लिये टार्च दिखा दिया गया है। बताया जाता है कि अपराध अनुसंधान विभाग की ओर से एक पत्र राजकीय महाविद्यालय में भेजा गया है जिसमें शिक्षिका के शैक्षिक प्रमाण पत्रों, स्थाई, जाति व अन्य प्रमाण पत्रों की प्रमाणित प्रतियां मांगी गई हैं।

उल्लेखनीय है कि शिक्षा विभाग में फर्जीपन से लगे लोगों पर सख्त कार्रवाई पिछले कुछ समय से हो रही है। इस जाँच के निशाने में फर्जी लोग हैं लेकिन जब जाँच होती है कि सन्देह के आधार पर कई की पड़ताल होती है। अभी तक की जाँच-पड़ताल में कई पर गाज गिर चुकी है और उनके अभिलेख गड़बड़ पाए गए।

बताया जा रहा है कि प्रमुख सचिव गृह उत्तराखण्ड शासन द्वारा के पत्र के क्रम में अपर पुलिस महानिदेशक, अपराध एवं कानून व्यवस्था उत्तराखण्ड के आदेश के द्वारा बेसिक शिक्षा विभाग उत्तराखण्ड में कार्यरत फर्जी शिक्षकों एवं अन्य समस्त शिक्षकों के प्रमाण पत्रों की जाँच विशेष अन्वेषण दल (एसआईटी) अनुसंधान विभाग द्वारा की जा रही है। इसी सिलसिले में जिसमें जनपद उधमसिंह नगर में पूर्व में कार्यरत शिक्षिका का स्थानान्तरण टनकपुर डिग्री कालेज में हुआ है। इसकी जाँच हेतु प्राचार्य से उक्त शिक्षिका द्वारा अपनी नियुक्ति के दौरान लगाये गये समस्त प्रमाण पत्रों को उपलब्ध कराने को कहा गया है ताकि जाँच सम्पूर्ण की जा सके। पूरा मामला क्या है यह तो समय बताएगा। अन्य जगह भी इस प्रकार की जाँच जारी है।

पार्वती सरोवर के लिए शटल सेवा का विरोध

धारचूला। आदि कैलास यात्रा के दौरान पर्यटकों की सुविधा के लिये प्रस्तावित सटल सेवा का कुटी के ग्रामीणों ने विरोध किया है। इस सम्बन्ध में आदि कैलास विकास समिति के पदाधिकारियों ने जिला अधिकारी को सम्बोधित ज्ञापन एसडीएम को सौंपा और कहा कि सटल सेवा से पर्यटकों की भारी भीड़ होगी जिससे पर्यावरण को नुकसान होगा।

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
मो.- 9458920379, 6396098804
YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
www.mountainheights.in
मो. 9760007148

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House-
Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

बैशाख के पावन अवसर पर
हार्दिक शुभकानाओं
के साथ-
कवीन्द्र सिंह पांगती
नन्दा होम्स,
कमलुवागांजा रोड
हल्द्वानी

गोपाल सिंह मर्तोलिया
दोनहरिया, भोटिया पड़ाव
हल्द्वानी

नरेन्द्र सिंह दताल
'न्योला पंचाचूली'
दारमा
मेरठ (यूपी)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)